इन भावों का फल क्या होगा ?

सुख दुख जीवन मरण लाभ अलाभ संयोग वियोग यश अपयश का कारण क्या ?

कर्म

कर्म किसे बंधते है ?

- बालक को युवा को वृद्ध को
- समझदार या नासमझ को
- यथा योग्य योग और कषायों के अनुसार सबको

कर्म किस निमित्त से बँधते है ?

भावों से

जैन धर्म भाव प्रधान धर्म है

ध्यान देने योग्य बाते

- स्वयं किए जो कर्म शुभाशुभ फल निश्चय ही वे देते करे आप फल दे अन्य तो स्वयं किए निष्फल होते
- अपने परिणामों के बिगड़ने का भय रखना
- पाप से घृणा करो पापी से नहीं
- जो भाव हम बार बार करते है वो हमारे संस्कार बन जाते है

भाव कितने प्रकार के होते है ?

शुभ भाव — पूजा आदि का भाव

- पुण्य बंध का कारण

अशुभ भाव — हिंसा आदि का भाव

- पाप बंध का कारण

शुद्ध भाव — वीतराग भाव

- मुक्ति का कारण

जैसी करनी वैसी भरनी

बेहरा कौन ?

जो जिनवाणी नहीं सुनते एवं विकथा कुशास्त्र मन मे विकार उत्पन्न करने वाली बात सुनते है ।

अंधा कौन ?

जो भगवान के दर्शन नहीं करते एवं पराई माँ बहन को बुरी निगाह से देखते है

गूंगा कौन ?

जैन धरम के सिद्धांत को सुनकर धर्म की निन्दा करते है

भाव सबसे ज्यादा कब बिगड़ते है ?

- पर पदार्थ मे इष्ट अनिष्ट की कल्पना से
- अपनी इच्छा अनुसार कार्य की कल्पना से
- पर मे दोष देखने से

वीतराग भाव के सन्मुख होने का उपाय

तत्वज्ञान के अभ्यास से यह विचार करना

- मैं कौन हूँ
- मेरा स्वरूप क्या हैं
- इन भावों का फल क्या होगा